नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक
ISSN: 2349-4654
वर्ष : 14, अंक : 1, जनवरी 2026

विषय: ताल पक्ष में 'लड़ी' का महत्त्व एवं उपयोगिता – तबला और कथक के संदर्भ से

शिवराम नारायण मोपकर
शोधार्थी
गोवा संगीत महाविद्यालय, आल्तिनो, पणजी, गोवा

डॉ. उदय कुलकर्णी
शोध निर्देशक
असि. प्रोफेसर, गोवा संगीत महाविद्यालय, आल्तिनो, पणजी, गोवा

सार-संक्षेप

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की समृद्ध परंपरा में "ताल" एवं ताल के विस्तार का विशेष स्थान है। इस परंपरा में किसी भी ताल और उसके ठेके की ध्वन्यात्मक, लयात्मक एवं रचनात्मक विविधता ही उसे संगीत-जगत में अद्वितीय बनाती है। कथक और तबला — ये दोनों ही विधाएँ अपने-अपने संदर्भ में ताल-पक्ष को अभिव्यक्त करने में निपुण हैं। टुकड़ा, चक्रदार, गत आदि जैसे अनेक संकल्पनाओं की तरह इन दोनों कलाओं में 'लड़ी' एक महत्त्वपूर्ण रचनात्मक स्वरूप के रूप में देखी जाती है, जो न केवल लय की गति को दर्शाती है, बल्कि कलाकार की तकनीकी दक्षता और सौंदर्यबोध का भी परिचय देती है। यह शोध-पत्र तबला वादन में बजने वाले पेशकार, कायदा एवं रेला आदि जैसी विस्तारक्षम रचनाओं की तुलना में 'लड़ी' के महत्त्व एवं उपयोगिता का विश्लेषण करता है— विशेषतः स्वतंत्र तबला वादन और कथक नृत्य के संदर्भ में। इस शोध-पत्र में हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि लड़ी की रचना, प्रस्तुति और शास्त्रीय पद्धतियों में उसका क्या स्थान है। इस विषय के अध्ययन एवं विवेचनात्मक विचारों से तबला एवं कथक के विद्यार्थी तथा कथक नृत्य के संगतकार निश्चित ही लाभान्वित होंगे।

मुख्य शब्द: लडी, जटिलता, ततकार, भाषा, जाति, संगत

शोध-पत्र

प्रस्तावना

मनुष्य ने प्राचीन काल से चिरंतन चलते आ रहे काल के मापन के लिए उसकी अलग-अलग आकृतियाँ निर्धारित की हैं, जैसे – युग, वर्ष, मास, दिन आदि। इसी प्रकार संसार की सभी संगीत शाखाओं में प्रायः इसी काल में से संगीत की उपयुक्तता के अनुसार मापन सुविधा हेतु 'लय' के माध्यम से योजना की गई है। निश्चित ही विश्व की सभी संगीत विधाओं में लय है, किन्तु 'ताल' केवल भारतीय संगीत की विशेषता है। लघु, गुरु आदि से युक्त सशब्द–निशब्द क्रिया द्वारा गीत, वाद्य एवं नृत्य को परिमित करने वाला काल ही 'ताल' कहलाता है। संगीत में प्रत्येक कलाकार अपने गायन, वादन या नृत्य को ताल में स्थापित कर अपने क्षेत्र में निहित विविध संकल्पनाओं के आधार पर अपनी कला का विस्तार करता है। तबला वादन में इसी ताल का विस्तार पेशकार, कायदा, रेला, टुकड़े आदि के माध्यम से करने की परंपरा गुणीजन द्वारा की गई है। नाद-विविधता एवं सौंदर्य के परिप्रेक्ष्य से विचार करें तो स्वतंत्र तबला वादन में प्रत्येक वादन-प्रकार की अपनी-अपनी विशेषता एवं विस्तार की प्रणाली है, तथा सभी संकल्पनाएँ सौंदर्य-सिद्धांतों से प्रभावित एवं विकसित होती आई हैं। स्वतंत्र तबला वादन की इस परंपरा का सबसे प्राचीन घराना दिल्ली घराना माना जाता है। पेशकार, कायदा, रेला आदि इस घराने की प्रमुख विशेषताएँ हैं। लय के परिप्रेक्ष्य में वादकों को पेशकार, कायदा और रेला के मध्य लय में वादन-प्रकार की आवश्यकता का आभास हुआ होगा; इसी कारण 'लड़ी' जैसे जटिल बोलों की संकल्पना की निर्मिति की गई। तबले के बनारस घराने में भी 'लड़ी' का एक अलग दृष्टिकोण प्राप्त होता है। तबला वादन की भाँति कथक नृत्य में भी निहित अनेक संकल्पनाएँ– जैसे 'बाँट', 'चलन' और 'जरब' की तरह 'लड़ी'–तत्कार में प्रस्तुत की जाती है। इस शोध-पत्र में तबला वादन में 'लड़ी' का विस्तार तथा कथक नृत्य की संगत के परिप्रेक्ष्य से तबला-वादक कलाकार को 'लड़ी' में 'तक', 'तकिट', 'तकदिमि', 'घिन' आदि बोलों के लिए लय के अनुरूप तबले के बोलों का चयन कर विविध ताल एवं जातियों में 'लड़ी' प्रस्तुति में सुलभता प्राप्त हो–यही शोधार्थी का उद्देश्य है।

शोध पद्धती – विश्लेषणात्मक

प्रस्तुत शोध-पत्र के लेखन में तबला वादकों के साक्षात्कार, इलेक्ट्रॉनिक श्रव्य एवं दृश्य माध्यमों, विविध कार्यशालाओं तथा पुस्तकों आदि के माध्यम से विचारों और बंदिशों को संग्रहित कर उनका विश्लेषणात्मक विवेचन किया गया है।

परिकल्पना

तबला तथा कथक नृत्य में 'लड़ी' का विश्लेषणात्मक अध्ययन तात्पर्यतः यह सिद्ध करना चाहता है कि इस विषय का अभ्यास तथा पारंपरिक और वर्तमान में स्थित विस्तार की प्रणाली के परिप्रेक्ष्य से स्वतंत्र तबला वादन एवं कथक जगत को निश्चित ही समृद्ध और लोकप्रिय बना सकता है, साथ ही कथित रचनाओं में निहित भाषा एवं गणितीय सौंदर्य तत्वों का बोध कराता है।

अध्ययन

आगे हम स्वतंत्र तबला वादन एवं कथक के विद्वानों द्वारा रचित 'लड़ी' की व्याख्या तथा उसकी रचना में निहित गणितीय एवं भाषिक सौंदर्य जैसे विविध पहलुओं के आधार पर चिंतन करेंगे।

'लड़ी' का अर्थ है — एक श्रृंखला। 'लड़ी' की परिभाषा और उसके महत्त्व के विषय में कई दृष्टिकोण विद्यमान हैं।

'लड़ी' शब्द की उत्पत्ति

'लड़ी' यह शब्द हिंदी के 'लड़' शब्द से बना है। मोतियों या फूलों के हार को 'लड़' कहा जाता है। इसका एक अर्थ 'मुड़ा हुआ' भी है। उदाहरण के लिए — कई रस्सियों को आपस में घुमाकर या एक के ऊपर एक लपेटकर रस्सी बनाई जाती है। 'लड़ी' में गुंथे हुए बोल भारी होते हैं, लेकिन यदि पूरी तैयारी के साथ बजाया जाए, तो वे 'रौ' जैसी ध्वनि उत्पन्न कर सकते हैं। (मुळगांवकर, पृ. 156)

'लड़ी' का सांगीतिक रूप

'लड़ी' एक प्रकार की गत होती है, किंतु उसका उद्‌गम अधिकांशतः 'कायदे' जैसी रचनाओं से हुआ माना जाता है। 'लड़ी' शब्द में दो अर्थ अभिप्रेत हैं — पहला, रेशम की वर्तुलाकार लड़ी जैसी 'लड़' (गत), जिसमें कोई ऐंठन नहीं होती। यह लड़ी इस प्रकार वर्तुलाकार बाँधी जाती है कि उस रचना का आरंभ-बिंदु और अंत्य-बिंदु एक-दूसरे में बेमालूम रीति से एकरूप हो जाते हैं। ऐसी वर्तुलाकार रचना को पुनः-पुनः बजाने पर उसकी 'सम' पहचानना या पकड़ना कठिन होता है। उस्ताद इनाम अली के मतानुसार, 'लड़' शब्द 'लड़ाई' की याद दिलानेवाले वादन-प्रकार — अर्थात् 'लड़ी' — से भी संबंधित है। यहाँ दाएँ और बाएँ तबले पर बजाए जानेवाले अक्षर इस प्रकार चुने जाते हैं कि मानो वे तबले पर एक-दूसरे से 'लड़ते' हुए प्रतीत होते हैं। (माइनकर, पृ. 76)

अभी हम ताल तिनताल में बद्ध दिल्ली घराने की चतुष्र जाति की 'लड़ी' में बोलों के चयन एवं विस्तार की प्रणाली पर सोदाहरण चर्चा करेंगे।

लडी – 1 (मुळगावकर, अरविंद, 24-08-2006)

मुखः

धिडनग	तिटधिड	नगतिट	धिडनग	नगतिट	धिडनग	तिटधिड	नगतिट
×				2			
किडनग	तिटकिड	नगतिट	किडनग	नगतिट	धिडनग	तिटधिड	नगतिट
0				3			

दोहराः

धिडनग	तिटधिड	नगतिट	धिडनग	धिडनग	तिटधिड	नगतिट	धिडनग
×				2			
धिडनग	तिटधिड	नगतिट	धिडनग	नगतिट	धिडनग	तिटधिड	नगतिट
0				3			

+ खाली

पलटा:१

घिडनग	तिटघिड	नगघिड	नगतिट	घिडनग	तिटघिड	नगतिट	घिडनग
×				2			
घिडनग	तिटघिड	नगतिट	घिडनग	नगतिट	घिडनग	तिटघिड	नगतिट
0				3			

+ खाली

पलटा:२

घिडनग	तिटघिड	नगतिट	घिडनग	तिटघिड	नगतिट	घिडनग	तिटघिड
×				2			
नगतिट	घिडनग	तिटघिड	नगतिट	घिडनग	तिटघिड	नगतिट	घिडनग
0				3			

+ खाली

पलटा:३

तिटघिड	नगतिट	घिडनग	नगतिट	घिडनग	तिटघिड	नगतिट	घिडन
×				2			
तिटकिड	नगतिट	किडनग	नगतिट	किडनग	तिटघिड	नगतिट	घिडनग
0				3			

तिहाई:

(तिटघिड	नगतिट	घिडनग	नगतिट	घिडनग	तिटघिड	नगतिट	घिडनग
×				2			
नगतिट	घिडनग	तिटघिड	नगतिट	घे ऽ	घिडनग	तिटघिड	नगतिट
0				3			
घे ऽ	घिडनग	तिटघिड	नगतिट	घे ऽ) ×3			
×				2			

उपरोक्त 'लड़ी' बोल-पंक्ति की मात्राकृति 1, 1, 1, 1, , मात्रा की है। इसकी शुरुआत 'घिडनग' से होती है और अंत 'तिट' बोल पर होता है। इसमें 'धा' अक्षर का अभाव होने के कारण किसी भी विद्यार्थी को पलटा अर्थात् विस्तार के समय एक प्रकार की परिधि या सीमा का अनुभव होता है। इसलिए पेशकार, कायदा और रेला की तुलना में इसका विस्तार सौंदर्य के परिप्रेक्ष्य से सीमित माना जाता है। बाएँ हाथ पर 'घि' अक्षर पर ज़ोर (जरब) देने से ही पलटा, बल आदि की मात्राकृति को समझा जा सकता है। 'घिडनग' और 'तिट' बोलों का संयोजन इस रचना की विशेषता तथा उसके सौंदर्य की परिकल्पना को व्यक्त करता है। मुख से लेकर अंत तक के विस्तार में 'धा' अक्षर के न होने के कारण वादक कलाकार को तिहाई की योजना बनाते समय अंतिम अक्षर के चयन में चुनौती का अनुभव होता है। इसी कारण तिहाई में 'घे' अक्षर को 'सम' पर प्रतिष्ठित किया गया है।

उपरोक्त दिए गए प्रत्येक पलटे में बोलों की संरचना कलात्मक दृष्टि से उलट-पुलट कर इस प्रकार रची गई है कि कोई भी वादक कलाकार प्रत्येक बल पर कम-से-कम तीन पलटे प्रस्तुत कर सके — इस बात का विशेष ध्यान शोधार्थी ने पलटों की रचना में रखा है।

इसी प्रकार कुछ चयनित 'लड़ियाँ' नीचे लिपिबद्ध की गई हैं।

१. लडी – २ (दंडगे, शिवराम, 04-08-2025)

मुख:

घेगेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	ताकेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन
×				2			
धिननाना	गेनताके	तिटकिट	धिननाना	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	ताकेतिट
0				3			

केकेतिट	केकेतिट	केनतिन	नानाकेन	ताकेतिट	केकेतिट	केनतिन	नानाकेन
×				2			
धिननाना	गेनताके	तिटकिट	धिननाना	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	ताकेतिट
0				3			

दोहराः

घेगेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	घेगेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन
×				2			
घेगेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	ताकेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन
0				3			
घेगेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	ताकेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन
×				2			
धिननाना	गेनताके	तिटकिट	धिननाना	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	ताकेतिट
0				3			

+ खाली पलटाः१

घेगेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	गेनधिन	नानागेन	गेनधिन	नानागेन
×				2			
घेगेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	ताकेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन
0				3			

+ खाली पलटाः२

घेगेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	गेनधिन	गेनधिन	गेनधिन	नानागेन
×				2			
घेगेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	ताकेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन
0				3			

+ खाली पलटाः३

घेगेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	तागेतिट
×				2			
घेगेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	ताकेतिट	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन
0				3			

+ खाली पलटाः४

घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	तागेतिट	केकेतिट	गेनधिन	नानागेन	तागेतिट
×							
गेननाना	गेनताके	तिटकिट	धिननाना	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	तागेतिट
0				3			

+ खाली तिहाईः

(गेननाना	गेनताके	तिटकिट	धिननाना	घेगेतिट	गेनधिन	नानागेन	तागेतिट
×				2			

केकेतिट	केनतिन	नानाकेन	ताकेतिट	घे ऽ	केनतिन	नानाकेन	ताकेतिट
0				3			
घे ऽ	केनतिन	नानाकेन	ताकेतिट	घे ऽ	ऽ ऽ) ×3		
×				2			

उपरोक्त रचना की बोल-पंक्ति की मात्राकृति इस प्रकार है — 1, 3, 4, 3, 5 मात्रा।

इस रचना में 'घेगेतिट', 'धिननानागेन' तथा 'नानागेनतागेतिट' बोल प्रमुख और महत्त्वपूर्ण हैं। इस रचना में 'नानागेन' बोल के होने से 'लड़ी क्रमांक–1' की तुलना में इसका विस्तार अधिक व्यापक प्रतीत होता है। परंतु 'धा' अक्षर के अभाव के कारण तिहाई में अंत्य अक्षर के रूप में 'घे' का चयन उचित सिद्ध होता है।

- अब हम तबले के बनारस घराने के दृष्टिकोण से 'लड़ी' विषय पर चर्चा करेंगे।

इस घराने में गणितीय सौंदर्य की अपेक्षा नाद-सौंदर्य को अधिक महत्त्व दिया गया है। इसलिए किसी भी ताल में, विशेषतः केहरवा या दादरा अंग की 'लग्गी' प्रस्तुत करते समय दाएँ-बाएँ हाथ के खाली और भरी अक्षरों पर उचित ज़ोर (जरब) देकर नाद में उतार-चढ़ाव उत्पन्न किया जाता है, जिससे 'लग्गी' का रूपांतरण 'लड़ी' में होता है। इस प्रक्रिया में 'लड़ी' संकल्पना का जो मूल उद्देश्य — अर्थात् नियमितता है, उसे सदैव बनाए रखा जाता है।

उदाहरण स्वरूप एक 'लड़ी' नीचे लिपिबद्ध की गई है।

(मिश्रा, शिवराम, 26–08–2025)

लग्गी –

धाती	धागे	नाति	नाडा	धाती	धागे	नाति	नाडा
×				2			
धाती	धागे	नाति	नाडा	धाती	धागे	नाति	नाडा
0				3			

उपरोक्त 'लग्गी' का 'लडी' में रुपांतर देखेंगे।

'लडी'

धाती	धागे	नाति	नाडा	ताति	धागे	नाधिं	नाडा
×				2			
धाती	धागे	नाति	नाडा	ताति	धागे	नाधिं	नाडा
0				3			

लौट-पलट –

धागे	नाति	नाडा	ताति	ताके	नाधिं	नाडा	धात
×				2			
धागे	नाति	नाडा	ताति	ताके	नाधिं	नाडा	धाती
0				3			

लौट-पलट –

नाडा	धाती	धागे	नातिं	नाडा	धाती	धागे	नाधिं
×				2			
नाडा	धाती	धागे	नातिं	नाडा	धाती	धागे	नाधिं
0				3			

उपरोक्त प्रकार की रचना के विस्तार एवं विविध रूपों की संभावना को ध्यान में रखते हुए दाएँ–बाएँ पर उपयुक्त अक्षरों का चयन किया जाता है। अंत में, 'लग्गी' के समान मध्य लय के एक आवर्तन में ही तिहाई द्वारा समाप्ति की जाती है।

- अभी 'कथक' नृत्य के परिप्रेक्ष्य में 'लड़ी' विषय पर चर्चा करेंगे।

कथक एक ऐसा नृत्य है जिसमें नर्तक या नर्तकी अपनी विविध हस्त-मुद्राओं एवं पदन्यास के माध्यम से मंच पर ताल और लय की प्रस्तुति कर अत्यंत कुशलता से विविध भावों का प्रदर्शन करते हैं। इस प्रस्तुति के लिए उचित एवं आदर्श तबले की संगति में वादक उपयुक्त बोलों का चयन कर विविध नादात्मक एवं लयात्मक संरचनाओं की प्रस्तुति करता है।

कथक नृत्य में 'लड़ी' प्रायः किसी विशेष बोल से प्रारंभ होकर विभिन्न बोलों की श्रृंखला के रूप में प्रस्तुत की जाती है। इसमें हस्त-मुद्राओं, पैरों की थापों (तत्कार) और भाव-भंगिमाओं का सम्मिलन होता है। 'लड़ी' कथक में नृत्य की गतिशीलता को दर्शाती है। इसमें भाव और लयांग का संचालन तथा ताल पर नियंत्रण का सुंदर समन्वय होता है। विविध तालों एवं जातियों में इस विधा की प्रस्तुति नर्तक की लय-निपुणता और ताल-ज्ञान का प्रमाण देती है।

उदाहरण के तौर पर कथक में प्रस्तुत की जाने वाली 'लड़ी' एवं संगत हेतु तबले पर चुने हुए बोल लिपिबद्ध किए गए हैं।

२. लडी-१, ताल झपताल, रचना पंडिता शमा भाटे (मडकईकर, शिवराम, 22-08-2025)

मुख-

तकिटत	किटधिन	तकधिन	तकिटत	किटधिन
धाऽतिटधा	तिटघेना	धागधिन	धाऽतिटधा	तिटघेना
×		2		
तकिटत	किटधिन	तकधिन	तकिटत	किटधिन
ताऽतिटता	तिटकेना	तागतिन	धाऽतिटधा	तिटघेना
0		3		

इसका विस्तार कायदा या रेला समान(संपूर्ण बंदिश एगुन एवं दुगुन) न कर निचे लिपिबद्ध किए विस्तार प्रणाली कि तरहा करने कि परंपरा है।

विस्तार-१

तकिटत	किटधिन	
धाऽतिटधा	तिटघेना	
×		
तकधिन	तकिटतकिटधिन	तकिटतकिटधिन
धागधिन	धाधिडनगतकतिरकिटधिनधिन	धाधिडनगतकतिरकिटधिनधिन
2		

+ खाली

विस्तार-२

तकिटत	किटधिन	
धाऽतिटधा	तिटघेना	
×		
तकधिनतकधिन	तकिटतकिटधिन	तकिटतकिटधिन
धातिरकिटतक धातिरकिटतक	धाधिडनगतकतिरकिटधिनधिन	धाधिडनगतकतिरकिटधिनधिन
२		

+ खाली

संपुर्ण दुगुन में प्रस्तूत करने हेतू ताल के 4 थे खंड से उठाण

विस्तार-३

तकिटत	किटधिन

धाऽतिटधा तिटघेना

×

तकधिनतकधिन तकिटतकिटधिन धिनतकिटतकिट

धातिरकिटतक धातिरकिटतक धाघिडनगतकतिरकिटधिनधिन धिनधिनतकतिरकिटतकतिरकिट

2

तकिटत किटधिन

ताऽतिटता तिटकेना

0

तकधिनतकधिन तकिटतकिटधिन धिनधाऽनताऽन

धातिरकिटतकधातिरकिटतक धाघिडनगतकतिरकिटधिनधिन धिनगिनधाऽनताऽन

3

विस्तार-4

तकिटतकिटधिन तकिटतकिटधिन

धाघिडनगतकतिरकिटधिनधिन धाघिडनगतकतिरकिटधिनधिन

×

तकधिनतकधिन तकिटतकिटधिन तकिटतकिटधिन

धातिरकिटतकधातिरकिटतक धाघिडनगतकतिरकिटधिनधिन धाघिडनगतकतिरकिटधिनधिन

2

+ खाली

विस्तार-५

तकिटतकिटधिन तकिटतकिटधिन

धाघिडनगतकतिरकिटधिनधिन धाघिडनगतकतिरकिटधिनधिन

×

तकधिनतकधिन तकिटधिकिटतकि टधिकिटधिनधिन

धातिरकिटतकधातिगेनधिनधिन धातिरकिटतकतिरकिटधातिर किटतकतिरकिटधिनधिनधिनधिन

२

+ खाली

तिहाई-

तकिटतकिटधिन तकधिनधाऽनता

धाघिडनगतकतिरकिटधिनधिन धातिगेनधिनधिनधाऽति

×

ऽनधाऽनताऽन धा ऽ तकिटत किटधिनतकधिन

ऽऽघेंऽऽतऽऽ धा ऽ धाघिडनगतक तिरकिटधिनधिनधातिगेनधिनधिन

2

धाऽनताऽनधाऽ नताऽनाधा ऽ

धाऽऽतिऽऽघेंऽ ऽतऽऽधा ऽ

0

तकिटतकिटधिन तकधिनधाऽनता ऽनधाऽनताऽन

धाघिडनगतकतिरकिटधिनधिन धातिगेनधिनधिनधाऽऽति ऽऽघेंऽऽतऽऽ

3

धा

धा

×

उपरोक्त रचना की मात्राकृति इस प्रकार है — 1.1/2, 1.1/2, 1/2, 1, 1.1/2, 1.1/2, 1/2।

इस 'लड़ी' के विस्तार में संपूर्ण मुख की एगुन-दुगुन न करके, कथित मात्राकृतियों की बोल-पंक्तियों की गणितीय एवं कलात्मक सौंदर्य के अनुसार एगुन-दुगुन कर, विशिष्ट पलटे के अंत में 'धाऽन, धाऽन' उठान के रूप में लगाकर मुख स्थापित किया गया है।

लड़ी के अभ्यास से विद्यार्थी ताल में गति-नियंत्रण और रचनात्मकता को विकसित कर सकें — इस उद्देश्य से तिश्र जाति में 'लड़ी' लिपिबद्ध की गई है।

लडी-२, ताल-तिनताल, रचना पं. सुरेश तळवलकर (मडकईकर, शिवराम, 22-08-2025)

तकत	कतकि	टतक	तकिट
धातिगेनधाति	गेनधातिगेन	धिनधातिगेन	धातिगेनधिन

×

तकत	कतकि	टतक	तकिट
धातिगेनधाति	गेनधातिगेन	धिनधातिगेन	धातिगेनधिन

2

तकत	कतकि	टतक	तकिट
धातिगेनधाति	गेनधातिगेन	धिनधातिगेन	धातिगेनधिन

0

तकिट	तकिट	तकत	कदिमि
धातिगेनधिन	धातिगेनधिन	धातिगेनधाति	गेनधिनधिन

३

पलटा-१

तकत	कतकि	टतक	तकिट
धातिगेनधाति	गेनधातिगेन	धिनधातिगेन	धातिगेनधिन

×

तकिट	तकिट	तकत	कदिमि
धातिगेनधिन	धातिगेनधिन	धातिगेनधाति	गेनधिनधिन

२

+ खाली

पलटा-२

तकत	कतकि	टतक	तकिट
धातिगेनधाति	गेनधातिगेन	धिनधातिगेन	धातिगेनधिन

×

तकत	कदिमि	तकत	कदिमि
धातिगेनधाति	गेनधिनधिन	धातिगेनधाति	गेनधिनधिन

२

+ खाली

पलटा-३

तकत	कतकि	टतक	तकिट
धातिगेनधाति	गेनधातिगेन	धिनधातिगेन	धातिगेनधिन
×			
तकदि	मितक	दिमित	कदिमि
धातिगेनधिन	धिनधातिगेन	धिनधिनधाति	गेनधिनधिन
२			

+ खाली

तिहाई-

तकत	कतकि	टतक	तकिट
धातिगेनधाति	गेनधातिगेन	धिनधातिगेन	धातिगेनधिन
×			
तकदि	मिधाऽ	नतक	दिमिधा
धातिगेनधिन	धिनधाऽ	ऽधातिगेन	धिनधिनधा
२			
ऽनत	कदिमि	धाऽऽ	तकत
ऽऽधाति	गेनधिनधिन	धाऽऽ	धातिगेनधाति
0			
कतकि	टतक	तकिट	तकदि
गेनधातिगेन	धिनधातिगेन	धातिगेनधिन	धातिगेनधिन
3			
मिधाऽ	नतक	दिमिधा	ऽनत
धिनधाऽ	ऽधातिगेन	धिनधिनधा	ऽऽधाति
×			
कदिमि	धाऽऽ	तकत	कतकि
गेनधिनधिन	धाऽऽ	धातिगेनधाति	गेनधातिगेन
2			
टतक	तकिट	तकदि	मिधाऽ
धिनधातिगेन	धातिगेनधिन	धातिगेनधिन	धिनधाऽ
0			
नतक	दिमिधा	ऽनत	कदिमि
ऽधातिगेन	धिनधिनधा	ऽऽधाति	गेनधिनधिन
3			
धा			
धा			
×			

उपरोक्त रचना की मात्राकृति तिश्र जाति (3/1 — 1 मात्रा में 3 लघु अक्षर) में इस प्रकार है — (2, 2, 3, 5) 3, 3, 3, 2, 4।

यह रचना कलाकार की लयबद्ध समझ का प्रतीक है, जो विद्वान श्रोताओं को आकर्षित करते हुए ताल पर नियंत्रण का अभ्यास कराती है।

आधुनिक कथक नर्तक एवं तबला वादक 'लड़ी' को इसी प्रकार नवाचारी ढंग से प्रस्तुत कर, नव-नवीन बोल-संयोजन तथा सम-विषम आदि तालों और विविध जातियों में प्रस्तुति के इस विचार को वर्तमान में अपनाते जा रहे हैं।

निष्कर्ष

तबला वादन और कथक नृत्य के परिप्रेक्ष्य से 'लड़ी' ताल-पक्ष का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण माध्यम है, जो दोनों ही कलाओं में सौंदर्य, तकनीक और रचनात्मकता का परिचायक है। यह न केवल कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि कायदा, चलन, बाँट आदि की तरह ताल में निहित लयात्मकता को व्यावहारिक रूप से अनुभव कराने का भी श्रेष्ठ उपाय है। हिन्दुस्तानी संगीत परंपरा में 'लड़ी' का निरंतर अभ्यास और नवाचार, तबला वादन एवं नृत्य की धरोहर को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मुळगावकर, अरविंद, तबला, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, चौथा संस्करण
2. माईणकर, सुधीर, तबला-वादन कला और शास्त्र, अ. भा. गांधर्व महाविद्यालय मंडळ, मिरज, प्रथम संस्करण
3. साक्षात्कारः मुळगावकर, अरविंद, तबला कार्यशाला-गोवा,24-08-2006
4. साक्षात्कारः दंडगे, आमोद, 04-08-2025
5. साक्षात्कारः मिश्रा, विवेक, 26-08-2025
6. साक्षात्कारः मडकईकर, रेखा, 22-08-2025